

सं. ओ. वि. हिसार/115-86/32848—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. वन राजिक अधिकारी सामाजिक वानिक परियोजना, सिरसा के श्रमिक श्री मांगे राम, पुत्र श्री नन्द राम, गांव खैरमपुर, तहसील भण्डी आधमपुर, हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामलों में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री मांगे राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ओ. वि. हिसार/111-86/32854—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि परिवहन आयुक्त, हरियाणा चण्डीगढ़, 2. हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा के श्रमिक श्री किरपाल सिंह, हैल्पर पुत्र श्री सुचा सिंह, मकान नं. 1578, गांव व डा. रानियां, सिरसा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामलों में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री किरपाल सिंह हैल्पर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ओ. वि. आईडी/भिवानी/105-86/32861—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ 2. हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी के श्रमिक श्री खड़क सिंह, पुत्र श्री किशन सिंह मार्फत श्री भीम सिंह यादव, मकान नं. 192, सेक्टर 15, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामलों में कोई औद्योगिक विवाद है

और चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री खड़क सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ओ. वि. रोहतक/57-86/32871—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. रावल इण्डस्ट्रीज बहादुर गढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री होशियार सिंह, पुत्र श्री तेज राम मार्फत आर. एस. यादव प्रधान भारतीय मजदूर संघ रेलवे रोड, बहादुरगढ़ तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामलों में कोई औद्योगिक विवाद है।

और चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है।

क्या श्री होशियार सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?